जनजातीय महिलाओं को मिला मूल्यवर्धित दुग्ध उत्पाद निर्माण का प्रशिक्षण

पन्तनगर। 3 मई 2025। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के वित्तीय सहयोग से विश्वविद्यालय के कृषि संचार विभाग तथा कृषि विज्ञान केंद्र, काशीपुर के संयुक्त तत्वावधान में 'दुग्ध उत्पाद निर्माण एवं विपणन' विषय पर दो–दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य जनजातीय समुदाय की महिलाओं को मूल्यवर्धित दुग्ध उत्पादों के निर्माण की तकनीकी जानकारी प्रदान कर उन्हें आत्मनिर्भर और उद्यमशील बनाना था। इस अवसर पर अधिष्ठाता, कृषि महाविद्यालय डा. सुभाष चंद्र, पूर्व अधिष्ठाता, कृषि महाविद्यालय डा. एस.के. कश्यप, विभागाध्यक्ष, कृषि संचार विभाग डा. वी.एल.वी. कामेश्वरी एवं डा. अर्पिता शर्मा कांडपाल, परियोजना अन्वेषक एवं सहायक प्राध्यापिका, कृषि संचार विभाग की गरिमामयी उपस्थिति रही।

मुख्य अतिथि डा. सुभाष चंद्र ने अपने संबोधन में महिलाओं को आत्मनिर्भर बनने और स्वरोजगार अपनाने के लिए प्रेरित किया। डा. एस.के. कश्यप ने कहा यदि महिलाएं इस प्रकार के प्रशिक्षण से प्राप्त ज्ञान का उपयोग कर स्वरोजगार प्रारंभ करेंगी, तो इससे न केवल उनका व्यक्तिगत विकास होगा, बल्कि समाज का समग्र कल्याण भी संभव होगा। डा. वी.एल.वी. कामेश्वरी ने कहा यह प्रशिक्षण ग्रामीण महिलाओं को तकनीकी रूप से सक्षम बनाकर उन्हें आय सृजन के नए अवसर प्रदान करता है। ऐसे कार्यक्रम महिला सशक्तिकरण और ग्रामीण विकास की दिशा में सार्थक कदम हैं। डा. अर्पिता शर्मा कांडपाल ने बताया इस प्रशिक्षण का उद्देश्य महिलाओं को स्वावलंबी बनाना है। हम चाहते हैं कि वे यहां सीखी गई तकनीकों को अपनाकर अपना खुद का स्वरोजगार प्रारंभ करें और स्थानीय स्तर पर दुग्ध उत्पादों का निर्माण एवं विपणन कर आत्मनिर्भर बनें।

प्रशिक्षण सत्र के दौरान डा. सुनील कुमार, सह प्राध्यापक, पशु चिकित्सा महाविद्यालय ने स्वस्थ पशु पालन पर व्याख्यान दिया। इसके पश्चात डा. अनीता आर्य, सह प्राध्यापक, पशुचिकित्सा महाविद्यालय ने महिलाओं को मडुए से बने उत्पादों की विस्तृत जानकारी प्रदान की।